ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 2, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

प्रेमचंद के साहित्य में नारी संघर्ष और चुनौतियाँ

RACHANA CHOUDHARY

HINDI SAHITYA, PG IN 2017 & NET IN JUNE 2022, INDIA

सार

प्रेमचन्द ने दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बाल विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विवाह-विच्छेद, नारी चरित्र पर सन्देह, नारी शोषण की समस्याओं को उठाया है। इसके अतिरिक्त विधवा जीवन, वेश्याओं का जीवन, पर्दा प्रथा, बहु विवाह, कुरूपता आदि अनेक समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में स्थान दिया है तथा इनके समाधान के प्रयत्न भी किये हैं।

परिचय

मुंशी प्रेमचंद एक जनवादी तथा प्रगतिशील लेखक थे। प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक रहे है | उन्होंने कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया, जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया | प्रेमचंद ने अपना लेखन सन 1908 ई. के आसपास शुरु किया और 1936 तक उनकी कलम बिना रुके चलती रही. यह वह समय था जब भारतीय समाज में स्त्रियाँ दासी की तरह जी रही थी | सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने ठीक ही लिखा था कि हमारे समाज में स्त्रियाँ दासों की दासियाँ हैं | यह वह समय था , जिसमें स्त्रियाँ एक साथ उपनिवेशवाद और सामंतवाद की चक्की में पिस रही थी | उन्हें समाज में पुरुषों के जैसा अधिकार प्राप्त नहीं था, यही वजह थी कि प्रेमचंद नारियों के तत्कालीन दशा से संतुष्ट नहीं थे | मध्यवर्ग, निम्नवर्ग की नारियां अपने अधिकारों से वंचित थी। ज़मींदार, महाजन आदि परिवार की स्त्रियाँ घरेलू कार्यों तक सीमित थी जबकि काश्तकार आदि वर्ग की स्त्रियाँ घरेलू कार्यों के साथ-साथ खेतों में भी काम करती करती थीं। मध्यम वर्ग के परिवारों में नारी-शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता था। ऐसे समय में प्रेमचंद ने नारी समस्या को मुख्य विषय बनाया तथा अपने मध्यम व् निम्न वर्ग की स्त्रियों को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि अपने उपन्यास एवं कहानियों के माध्यम से नारी की दुर्दशा को उजागर किया, जो हिंदी साहित्य को दी हुई अपूर्व देन है। प्रेमचंद ने कहा है- नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है, उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए तभी समाज उन्नति करेगा।[1,2,3]

विचार-विमर्श

आज की संवेदनशीलता में प्रेमचंद के साहित्य में वर्णित स्त्रियां निश्चित रूप से परंपरा या पितृसत्ता के हाथों अपने अस्तित्व को मिटाती हुई नज़र आएंगी, पर उनके कथ्य को ऐतिहासिक गतिशीलता में रखकर देखें, तो नज़र आता है कि ये स्त्रियां अपने समय की परिधि, अपनी भूमिका को विस्तृत करती हैं, ऐसे समय में जब ये परिधियां अत्यंत संकरी थीं. प्रेमचंद आधुनिक भारतीय साहित्य के ऐसे लेखक हैं, जिनकी रचनाओं में निहित वैचारिकता के पुनर्पाठ की आवश्यकता हर दौर में और अधिक प्रासंगिक लगने लगती है या यूं समझें कि समय के उनके साहित्य की नई-नई जरूरतें निकलती जा रही हैं. फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ ने प्रेमचंद के साहित्य के विषय में लिखा था कि कैसे उन्हीं की उंगली पकड़कर हिंदी-उर्दू का कथा साहित्य सही मायनों में डी-क्लास हो पाया था, पर इस विश्लेषण से भी आगे बढ़कर अगर प्रेमचंद को हम साहित्य की पूर्व-प्रचलित परंपरा से विद्रोह के रूप में ग्रहण करें तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी.[4,5,6]

हिंदी साहित्यिक परंपरा में जहां स्त्रियां केवल कथा में एक पात्र मात्र से अधिक की स्थिति में उपस्थित नहीं थी, वहां यह संभवतः प्रेमचंद ही थे जिन्होंने अपने स्त्री पात्रों को एक ठोस सामाजिक-आर्थिक आधार पर रखकर उनकी राजनीतिक अभिव्यक्ति को संभव बनाया. और यहां हम राजनीति की बात इसीलिए कर रहे हैं कि लेखक की लेखनी से निकलकर पन्नों पर आकार ग्रहण करते शब्द- जिनसे अंततः साहित्य निर्मित होता है- वह एक विशिष्ट अर्थ में विशुद्ध राजनीतिक कर्म है.

प्रेमचंद का समय औपनिवेशिकता के साथ भारतीय राष्ट्रवाद के संघर्ष के तीव्रतर होते जाने का दौर था. यही वह दौर था, जब राष्ट्र-राज्य की व्यापक पृष्ठभूमि में महिलाओं की परिवर्तित होती हुई भूमिका को देखते हुए उन्होंने अपनी कहानियों, समाज में उसके स्थान को लेकर उसकी एक नई छवि की कल्पना की.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

पर इन सबके साथ ही प्रेमचंद के स्त्री पात्रों को लेकर जो आलोचना-दृष्टि है, गौर करें तो वह मुख्यतया दो अतिवादों में सीमित होकर रह जाती है. मसलन अगर एक धड़ा वह है जो उन्हें उदारवादी मानकर स्त्रियों के चित्रण में उनकी प्रगतिशील दृष्टि का विश्लेषण करता है तो वहीं दूसरी तरफ आलोचकों का एक बड़ा वर्ग उन्हें अंततः परंपरा की ही दुहाई देने वाला मानता है.

इस प्रकार इन दो अतिवादों से जूझते हुए प्रेमचंद के साहित्य में वर्णित स्त्रियों की कभी भी सम्यक परीक्षा नहीं हो पाती. इसलिए न केवल साहित्य के आलोचकों बल्कि इतिहासकारों ने भी प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री के स्वर को समझने की कवायद की है और हर बार प्रेमचंद-साहित्य के प्रति हमारी समझ में इजाफा ही होता आया है.

इतिहासकार चारु गुप्ता मानती हैं कि कैसे एक विशुद्ध भौतिकवादी-नारीवादी विश्लेषण से ही हम एक लेखक के तौर पर प्रेमचंद के वैचारिक संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन की धारा को समझ सकते हैं और उनके साहित्य में वर्णित स्त्रियों को ग्रहण कर सकते हैं.

जैसा कि गुप्ता कहती हैं, प्रेमचंद के कथा-साहित्य में स्त्री पात्रों का जो समुदाय बनता है वह मोटे तौर पर चार विशिष्ट वर्गों में समाहित किया जा सकता है. पहला वर्ग तो नारीत्व का आदर्श रूप ली हुई स्त्रियों का है, दूसरा वर्ग आदर्श नारियों का एकदम ही उलट, पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित स्त्रियों का बनता है, तीसरा वर्ग उन स्त्रियों का है जो शोषित और दमित हैं और चौथा वर्ग विद्रोहिनी या आवाज़ उठाने वाली स्त्रियों का है. पर इन एकदम ही नियत खांचों का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि यह सभी वर्ग अपने आप में निश्चित और रूढ़ हों, बल्कि कई बार एकाधिक चरित्रगत विशेषताएं आपस में घुली-मिली होती हैं और एक संश्लिष्ट स्त्री पात्र का गढ़न प्रेमचंद कर रहे होते हैं.[7,8,9]

परिणाम

स्त्री -विमर्श में प्रेमचंद का योगदान नींव की ईंट की तरह है।जो समाज निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाता है जिसके बिना समाज अधूरा है।वह पुरुष को आधार देती है,स्पर्धा नहीं करती। यह वह स्त्री है जो परिवार, समाज तथा राष्ट्र का निर्माण करती है। प्रेमचंद जी के नारी पात्रों ने शारीरिक सौंदर्य को महत्व न देकर हमेशा संघर्ष, परिश्रम, नैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य और सच्चाई को महत्व दिया गया है।२१वीं सदी में जहां एक ओर नारी आदर्शों में भौतिकता के प्रति आकर्षित हो रही ऊं, वहां ऐसे समय में प्रेमचंद के नारी पात्र एक सुखद एहसास दिलाते हैं।ये नारी पात्र पाश्चात्य सभ्यता की ओर आकर्षित भारतीय नारी के समक्ष एक चुनौती बनकर खड़ी हो जाती हैं। अतः नारी में अधिकार सजगता एवं स्वयं निर्णय लेने की क्षमता की पहल मुंशी प्रेमचंद ने ही की.

एक स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु जितने भी मुक्ति संघर्ष हुए हैं उनमें से एक है 'नारी चिंतन'।समाज निर्माण में स्त्री की भूमिका मुख्य होती है।धर्म ग्रंथों में स्त्री को संसार की जननी कहा गया है। आज भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी पदार्पण कर चुकी है।यही नारी चिंतन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'नारी विमर्श के नए रूप में हमारे समक्ष आ रहा है । इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि नारी पक्ष में लिखा गया साहित्य आज जिस व्यापक रूप में चर्चित हो रहा है उसका प्रारंभ प्रेमचंद काल से ही हो गया था । महिला सशक्तिकरण, महिला दिवस ,महिला दशक आदि ।

स्त्री अधिकारों के मिलने से आज नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठी है।लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो आज भी हमारे सामने ऐसी सामाजिक विसंगतियां हैं जो महिलाओं की गरिमा के अनुकूल नहीं है। देश में ,समाज में , महिलाओं का सशक्तिकरण होना आवश्यक है ।आज साहित्यकारों ने अपने- अपने दृष्टिकोण से विमर्श को रखा है । कहीं दोनों को समान माना गया है ,तो कहीं स्त्री स्वयं को परंपराओं के बंधन से मुक्त कर आधुनिकता की दौड़ में दौड़ रही है ।आज वह इतनी आगे निकल चुकी है कि हर क्षेत्र में अपनी अलग छवि बना ली है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से ही स्त्री आज आर्थिक रूप से निर्भर हो सकी है । मुंशी प्रेमचंद स्त्रियों की शिक्षा का समर्थन करते हैं। उन्हें पता था कि एक शक्ति संपन्न स्त्री ही समाज का सर्वांगीण विकास कर सकती है ।साथ ही साथ नारी के अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने को सही मानते हैं। यही विचार कथाकार मैत्रेयी पुष्पा के हैं ।उनका कहना है कि- "उच्च शिक्षा व आर्थिक स्वावलंबन स्त्री मुक्ति को सुनिश्चित करता है।"[10,11,12]

प्रेमचंद जी के कथा साहित्य का अपना स्त्री विमर्श है। अतः आधुनिक स्त्री विमर्श के कुछ तथ्य को हम इनके कथा साहित्य में देख सकते हैं ।वास्तव में स्त्री की अस्मिता तथा समाज व परिवार में सम्मान जनक भूमिका तथा उसके अधिकारों व दायित्वों से संबद्ध आयामों पर विचार व चिन्तन ही स्त्री विमर्श है । भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्रियों की जैविक एवं मानसिक स्थिति को प्रेमचंद जी ने अपनी कथा साहित्य के माध्यम से उजागर किया है ।उनकी रचनाओं में स्त्रियां दयनीय नहीं मिलती त्याग, समर्पण, निष्ठा, नैतिक मूल्य, भावुकता जैसे मानवीय संवेदनाओं के साथ -साथ मन के स्तर पर भी चेतनाशील हैं।यह चेतना उनमें परिवार एवं दांपत्य संबधों से जोड़े रखती है ।यही सबसे बड़ा कारण है कि उनमें संघर्ष करने की कशमकश चलती रहती है ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

मुंशी प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य उपन्यास जगत को 15 उपन्यास दिए।उनके उपन्यासों में नारी की आदर्श छवि का अंकन हुआ है।दरअसल प्रेमचंद आदर्शवादी कथाकार थे।यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में नारी पात्र भी विभिन्न आदर्शों को अपने भीतर समेटे हुए हैं। 'प्रेमा' उपन्यास की प्रेमा एक आदर्श प्रेमिका है । वह पूर्णा से कहती है, 'यहां भी यही ठान ली है कि चेरी बनूंगी तो उन्हीं की।' वह अमृतराय से बहुत प्रेम करती है।इसके बाद भी वह अपने माता-पिता की इच्छानुसार दाननाथ से विवाह कर लेती है । उपन्यास की नायिका पूर्णा आदर्श भारतीय नारी है।पति की मृत्यु के बाद वह फूल तक का त्याग कर देती है ।

'वरदान 'उपन्यास की सुशीला, माधवी,सुवामा,विरजन आदि नारी चरित्र भी आदर्श नारी चरित्र हैं।सुशीला और विरजन दोनों मां-बेटी में सेवा भावना कूट-कूटकर भरी है। सुवामा के बीमार होने पर वे दोनों उसकी सेवा में लगी रहती हैं।माधवी का चरित्र भी भारतीय नारी का आदर्श प्रस्तुत करता है ।प्रेमचंद के स्त्री -पात्र मालती तथा उसकी बहनें सरोज एवं वरदा स्त्री विषयक शहरी निर्णय की संकल्पना को चरितार्थ करते हैं।ग्रामीण परिवेश में धनिया सिलिया एवं सोना भी पीछे नहीं है।जमींदार की कन्या मीनाक्षी तो अपने अय्याश पति को हंटर से मारकर दंडित करने में भी नहीं हिचकती।प्रेमचंद का यह अपना विमर्श है। सेवासदन की नायिका सुमन और सगर्वा स्वाभिमानी नारी है।प्रेमाश्रम' की गायत्री सरल,निष्कपट और प्रेममयी नारी है। उसके आदर्श चरित्र के कारण ही उसे सिनेमाघर के भीतर महापुरुष के साथ बैठने में असहजता महसूस होती है ।वह आदर्श और पतिपरायण भारतीय नारी है ।परपुरुष के छू लेने से उसे अपना सतीत्व नष्ट होता दीखता है ।घर आने पर वह पति के चित्र को छाती से लगाए देर तक खड़ी रोती है। वह गरीबों की हमदर्द है और उनका हित चाहती है।

इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता कि स्त्री एवं पुरुष दोनों के सामंजस्य बिना सृष्टि की उत्पत्ति व उसके रहने की कल्पना भी नही की जा सकती ।दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं न कि विरोधी या प्रतिस्पर्धी। शायद ही किसी अन्य रचनाकार ने समझा हो, इस सत्य को हम नकार नहीं सकते जितना प्रेमचंद ने समझा। 'सती' की नायिका का यह कथन -"मैं जानती हूँ कि मैं मर भी जाती, तो मेरा सिरताज जन्म भर मेरे नाम को रोता रहता।ऐसे ही पुरुषों की स्त्रियां उन पर प्राण देती हैं। 'गोदान' उपन्यास के ग्रामीण पात्र धनिया और होरी तथा शहरी पात्र मि•मेहता और मालती दो विभिन्न विचारधारा के होने बावजूद भी अंत में एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं।धनिया के स्वभाव में कर्कशता होने के बावजूद उसमें पति-परायणता, स्पष्टवादिता और निर्भीकता जैसे गुण पाए गए हैं।[13,14,15]

वह भारतीय किसान की आदर्श भारतीय पत्नी है।उपन्यास के प्रारंभ में जब होरी रायसाहब के यहां जा रहा होता है, तब वह द्वार पर खड़े होकर एक टक देखती रहती है।उस समय उसकी मनःस्थिति का चित्रण करते हुए उपन्यासकार कहता है, वह जैसे अपने नारीत्व के सम्पूर्ण तप और व्रत से अपने पति को अभ्यदान दे रही थी।'रंग भूमि ' की सोफिया और विनयसिंह के बीच का संबंध भी इसी प्रकार का है ।स्त्री -पुरुष का संबंध मैत्री का है।ईसाई धर्म की सोफिया विनयसिंह से प्रेम करती है ।।शहरी पात्रों में यह भाव अधिक है ।तत्कालीन परिवेश में स्त्री -पुरुष के इस सूक्ष्म रूप को इतनी ताकत के साथ रखना प्रेमचंद जी के ही वश की बात थी।सिलिया एवं मातादीन विजातीय हैं,किंतु गैरजाति के होने के बाद भी उनके संबंध जातिवाद की अग्नि में नहीं झुलसते ।

प्रेमचंद का स्त्री विमर्श यह भी है कि वह व्रत के बदले व्रत,उपासना के बदले उपासना चाहती है।गोपा का यह कथन, 'स्त्री को जीवन में प्यार न मिले तो उसका मर जाना ही अच्छा है ।' यह कथन आज के स्त्री विमर्श की अवहेलना करता है ।आज के विमर्श की तरह प्रेमचंद का विमर्श सोच भी नही सकता था कि स्त्री को अगर पति का प्यार न मिले तो किसी परपुरुष की ओर जाए क्योंकि संसार में उसके लिए केवल पति ही जानने योग्य विषय नही है बल्कि उसे संसार जानने की भी इच्छा है । प्रेमचंद जी ने स्त्री जागरण का संदेश भी दिया पर उनके विचार में पाश्चात्य उच्छृंखलता नहीं आनी चाहिए ।उन्होंने स्त्री स्वतंत्रता को केवल आत्मस्वावलंबन की आवश्यकता तक माना है।पुरुष प्रधान समाज भले ही 'अलग्योझा' की मूलिया को कहता रहा, "मारे घमंड के धरती पर पांव न रखती थी,आखिर सजा मिल ही गई कि नहीं?

अब घर में कैसे निर्वाह होगा?वह किसके सहारे रहेगी ? " पर इसमें भी कोई अतिशयोक्ति नहीं कि वे स्त्री को कभी झुकते अथवा कमजोर देखना नहीं चाहते ।उसमें भी मान -सम्मान है, स्वयं पर विश्वास है ।वे एक ऐसी स्त्री का निर्माण करना चाहते हैं जो समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्षरत रहे गोदान के जमींदार की कन्या मीनाक्षी में यही भाव देखने को मिलता है ।मालती पढ़ी-लिखी स्त्री है।प्रगतिशील विचारधारा की स्त्रीहै।पर मीनाक्षी सीधी व मूक स्त्री है।स्त्री -पुरुष में समान भाव को नही मानती,किंतु अपने 'स्व' की रक्षा हेतु अपने अय्याश पति को हंटर से मारकर ऐसे पुरुष प्रधान समाज के शोषित रूप पर प्रहार करती है ।अधिकार की चर्चा आधुनिक स्त्री विमर्श का एक अविभाज्य रूप है ।सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, धार्मिक के साथ -साथ दैहिक तथा मानसिक सारे इसमें आ जाते हैं।प्रेमचंद के काल में इन अधिकारों को स्त्री के परिप्रेक्ष्य में तो सोचा भी नहीं जा सकता क्योंकि न तो स्थितियां और न ही परिवेश अनुकूल था ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

परन्तु प्रेमचंद ने इनमें से कई अधिकार जरूरी माने हैं। 'बेटों वाली विधवा ' की दुर्दशा बेशक बेटों के ही कारण हुई हो पर 'फूलमती' की बात सर्वमान्य थी।वे स्त्री के सक्षम होने में विश्वास रखते थे पति के होने या न होने पर भी उसके आत्मविश्वास में कोई कमी नहीं आयी।वे स्त्री मन के पारखी थे। उन्होंने बेटा -बेटी में कोई फर्क नही माना वे जानते थे कि घरों में फूट इसी कारण से पड़ती है। 'बेटों वाली विधवा ' की फूलमती ने जिद्द पकड़ ली और कहा -"विवाह तो मुरारीलाल के पुत्र से ही होगा, चाहे खर्च पांच हजार हों या दस हजार ।मेरे पति की कमाई है ।मैने मर -मर कर जोड़ा है। अपनी इच्छा से ही खर्च करूंगी ।तुम्हीं ने मेरी कोख से जन्म नही लिया,कुमुद भी उसी कोख से जन्मी है ।मेरी आँखों में तुम सब समान हो।" [16,17]

पुरानी परंपरानुसार चलते आ रहे बेटा -बेटी के भेद तोड़कर समाज में स्त्री जाति को उसका स्थान व अधिकार दिलाने में प्रेमचंद पीछे नही रहे।उनकी दृष्टि में स्त्री समाज का निर्माण करने के साथ-साथ संस्कार देती है, पोषण करती है कभी-कभी विद्रोह भी कर उठती है ।वह टूट कर फिर उठती है ।वह पुरुष मन को जानने वाली है।'कफ़न' के माधव की चिंता का कारण भी यही है कि वह स्वर्ग में जाकर बुधिया को क्या जवाब देगा ? क्योंकि पत्नी तो वह उसकी थी । मुंशी प्रेमचंद विधवा विवाह के भी समर्थक रहे हैं।भारतीय समाज उसे सदैव सामाजिक, नैतिक तथा दैहिक रूप से हाशिये पर डालता आ रहा है ।यहां नारी विमर्श यह मानता है कि, नारी भी एक इनसान है,उसे भी हर सुख चाहिए अर्थात् उनका विमर्श देह का विमर्श भले ही न हो पर असमय आए हुए वैधव्य के बोझ को सहती हुई स्त्री अपने जीवन को निरर्थक न समझे।विधवा स्त्री को सत्ता देकर भी उसकी व्यथा को कम करने का प्रयास लेखक ने 'स्वामिनी' की रामप्यारी के संदर्भ में किया है।इस रूप में प्रेमचंद का स्त्री -विमर्श अत्यंत सराहनीय है ।

कायाकल्प की मनोरमा सेवाभावना युक्त स्पष्टवादी नारी पात्र है।उसके गुणों के विषय में बताते हुए यशोदानंदन चक्रधर से कहते हैं,'उसे कपड़े का शौक नहीं, गहने का शौक नहीं, अपनी हैसियत को बढाकर दिखाने की धुन नहीं।सेवा कार्य में हमेंशा आपसे एक कदम आगे रहेगी।' कायाकल्प (पृष्ठ 105)। वह उदार नारी पात्र है । 'निर्मला' उपन्यास निर्मला की वेदना और जीवन संघर्ष की कहानी है ।निर्मला का आदर्श त्याग, प्रेम, सहनशीलता और पतिपरायणता से परिपूर्ण है ।वह अपने पिता के उम्र के पति के साथ जीवन में यथा संभव संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है।पति के आरोपों को सहन करती है और अपने पुत्रों से असीम अनुराग रखती है ।वह अत्यधिक सहनशील प्रवृत्ति की नारी है। रुक्मणी के तानों और तोताराम के संदेह बाणों को वह आराम से सह लेती है ।

इतना ही नही वह एक आदर्श सहेली भी है।सुधा उसके लिए कहती है:-"निर्मला ने मेरी बड़ी मदद की है ।मैं तो एकाध झपकी ले भी लेती थी, पर उसकी आँखे नहीं झपकी ।रात- रात भर बैठी या टहलती रहती थी ।उसके एहसान कभी न भूलूंगी" (निर्मला -पृष्ठ 091) इस उपन्यास की कल्याणी पुत्र वत्सला नारी है बच्चों के प्रति उसकी चिंता वास्तविकता लिए हुए है --"बच्चों को किस प्रकार छोडकर चली जाऊः? मेरे इन लालों को कौन पालेगा?ये किसके होकर रहेंगे? कौन इन्हे प्रातः काल दूध और हलवा खिलायेगा ,कौन इनकी नींद सोयेगा और जागेगा?" निर्मला की तरह सुधा भी एक पतिव्रता नारी है ।वह डॉक्टर साहब के संग अपना पति धर्म निभाती है।इस उपन्यास की कृष्णा भी आदर्श भगिनी है। नारी मनोविज्ञान की समझ प्रेमचंद में अपने समय से बहुत आगे की है।उस समय देश की स्थिति भी अच्छी नहीं थी।आज नारियों की प्रगति एवं परिवर्तन जिस ऊंचाई तक पहुंचा है वहां तक पहुंचने की पहल प्रेमचंद जी के नारी पात्रों में मिलती है। शिक्षित ही नहीं अशिक्षित नारियों में भी सूझ-बूझ, सही सोच मिलती है। 'गोदान' की अशिक्षित स्त्री चाहे धनिया, सिलिया,झुनिया हो या शिक्षित मालती, गोविंदी हो, 'रंगभूमि' की शिक्षित सोफिया हो या अशिक्षित सुभागी।[18,19]

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य जगत में मुंशी प्रेमचंद का पर्दापण एक विशेष महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। प्रेमचंद जी एक जनवादी तथा प्रगतिशील लेखक थे। मुंशी प्रेमचंद जी एक ऐसे जनवादी चेतना से सम्पृक्त लेखक थे जिन्होंने 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कार्यरत होते हुए भी आधुनिक समाज के 21 वीं शताब्दी तक की समस्याओं को अपने साहित्य में उस दौर में लिख दिया था। अगर हम ये कहे कि आज से करीब 100 वर्ष पहले ही प्रेमचंद जी ने महाभारत के संजय की भांति अपनी दूर दृष्टि से आने वाले कल को देख लिया था, तो यह कथन कतई गलत नहीं होगा। जिस प्रकार से इन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों में घटनाओं की रचना की थी वह आज की सच्चाई को बयां करती है। चाहे वह स्थिति एक किसान की हो, दलित की हो या फिर नारी की ही क्यूँ न हो, इनकी रचनाएँ समाज का वास्तविक रूप प्रस्तुत करती हैं। प्रेमचंद के नारी पात्रों में शहरीय वर्ग, गाँव का किसान समुदाय और अभिजात्य वर्ग के दर्शन होते हैं। अतः इनके व्यवहार, आचरण, प्रतिक्रियाओं पर सामंती आर्थिक व्यवस्था का पूरा प्रभाव दिखता है। उनकी कृतियों में सामाजिक परिस्थितियाँ सत्यता लिए हुये ज्यों की त्यों नज़र आती है, इनकी लेखनी में कहीं कोई काल्पनिकता का आभास नहीं होता। इनकी रचनाओं में असफलताएँ भी नजर आती है और सफलताओं द्वारा नई दिशा भी दिखाई देती है। प्रेमचंद जी के नारी पात्रों में हम एक माँ, पत्नी, प्रेमिका, बहन, सौतेली माँ, दोस्त, बदचलन, वेश्या, भाभी, ननंद, समाज सुधारक, देशप्रेमी, परिचारिका, आश्रिता आदि कई रिश्ते भी दिखाई देते हैं।

प्रेमचंद जी एक ऐसे लेखक थे जिन्होंने न सिर्फ नारी की दयनीय स्थिति को अपनी रचनाओं में उद्धृत किया बल्की नारी को पुरुष के समान अधिकार की भी बात सामने रखी| इनकी रचनाओं में नारी पात्र दीन दुखी तो है पर वह सशक्त है; वह अपने साथ हो रहे

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

अत्याचारों के खिलाफ लड़ने में सक्षम भी है, तभी तो वे अपने कालजयी उपन्यास में उस दौर में लिखते हैं जिसकी कल्पना उस दौर में करना भी अपराध था - "जब पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वो महात्मा बन जाता है और अगर नारी में पुरुष के गुण आ जाये तो वो कुलटा बन जाती है"। 'गोदान' में उद्धृत ये पंक्तियां प्रेमचंद का नारी को देखने का संपूर्ण नज़रिया बयां करती हैं। आज हमारा पूरा भारतीय समाज नारी को सशक्त बनाने के लिये जिस क्रांतिकारी दौर से गुज़र रहा है उस नारी को प्रेमचंद बहुत पहले ही सशक्त साबित कर चुके थे | प्रेमचंद के साहित्य की स्त्री सशक्त है वह 'कर्मभूमि' में उतरकर पुरुष के कांधे से कंधा मिलाकर देश की आजादी के लिए संघर्ष करती है, उसे 'गबन' कर लाये पैसों से अपने पति की भेंट में मिला चंद्रहार स्वीकृत नहीं है, वो एक गरीब किसान के दुख-दर्द की सहभागी बन अपना पतिव्रता धर्म भी निभाती है, वो 'बड़े घर की बेटी' भी है और उस सारे पुरुष वर्चस्व वाले परिवार में मानो अकेली मानवीय गुणों से संयुक्त है, वो मजबुरियों में पड़े अपने परिवार के लिये समाज के सामंत वर्ग से बिना डरे 'ठाकुर के कुएं' पे जाकर तत्कालिक व्यवस्था को चुनौती देती है और कभी एक माँ बनकर अपने बच्चे के लिये खुद की जान भी लुटा देती है। मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में जिस परिदृश्य को चित्रित किया है वो कतई नारी के अनुकूल नहीं रहा है और नारी उस काल में समाज के पिछले पन्ने का ही प्रतिनिधित्व करने वाली रहा करती थी, लेकिन इसके बावजूद मुंशीजी के साहित्य में नारी चरित्र उभरकर सामने आया है और इस साहित्य को देखकर लगता है कि मानों नारी समाज की मुख्यधारा का प्रतिनिधित्व कर रही है और पुरुष हासिये पर फेंक दिये गये हैं। प्रेमचंद जी के दो दर्जन से अधिक उपन्यासों में से निर्मला, मंगलसूत्र, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा, तो ऐसे उपन्यास हैं जो पूर्णरूपेण नारी चरित्रों पर ही केन्द्रित रहे हैं तो अन्य भी जो उपन्यास रहे हैं उनमें भी स्त्री चरित्र को पुरुष के समानांतर ही प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद की सैंकड़ो कहानियों में से जो कुछेक अति प्रसिद्ध कथाएँ रही हैं वो भी अपने प्रमुख नारी चरित्रों के कारण जानी जाती है जिनमें से ठाकुर का कुआँ, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दूध का दाम, कफ़न इत्यादि अति प्रसिद्ध हैं। उनके साहित्य में प्रस्तुत नारी छवि को देख ऐसा जान पड़ता है कि मानों समाज में मानवोचित गुणों की वाहक मात्र नारी ही है और जो पुरुष मानवीय गुणों से संपन्न हैं, वे भी नारी के प्रभाव में आकर ही मानवीयता से संपन्न हुए हैं।

प्रेमचंद अपनी रचनाओं में महिला चरित्रों को कर्म, शक्ति और साहस के क्षेत्र में पुरुष के समकक्ष प्रस्तुत करते हैं पर महिला की नैसर्गिक अस्मिता, गरिमा और कोमलता को वो क्षीण नहीं होने देते। प्रेमचंद का साहित्य उन तमाम आधुनिक महिला सशक्तिकरण के चिंतको के लिये उदाहरण प्रस्तुत करता हैं जो नारी को सशक्त बनाने के लिए उसके चारित्रिक पतन की पैरवी करते हैं और उसकी अस्मिता के भौंडे प्रदर्शन को नारी शक्ति का प्रतीक मानते हैं। इज्जत, शारीरिक सुंदरता, शारीरिक निर्बलता एवं उसके दैवीय गुणों को महिमामंडित कर नारी को बल पूर्वक घर में बंद रहने पर मजबूर किया गया है। यही कारण है कि परिवार में पुरुष वर्ग कब्जा जमाये बैठे हैं। वहीं स्त्री अपने पारिवारिक स्थान से गिरते हुये शीघ्र ही गुलाम बना दी जाती है । यह एक दुखद बात है कि जिस घर को एक नारी इतनी मेहनत और लगन से बनाती और चलाती है उसके त्याग और समर्पण की परवाह किसी को नहीं होती पुरुष समाज जब चाहे उसे बहार निकाल सकता है। भले सरकार और हमारी शिक्षा प्रणाली आज महिला को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रही है पर पुरुष मानसिकता को बदलने में अभी तक सब नाकाम ही हैं| इस पुरुष वर्चस्व प्रधान समाज में, घर के बाहर की बात तो दूर घर-परिवार के अंदर ही महिलाएं आज भी इस पुरुष प्रधान मानसिकता का शिकार होती हैं जहां उसे अपनी पसंद, अपनी इच्छाओं, जिजीविषाओं का हर पल गला घोंटना पड़ता है। इसी पुरुष मानसिकता की देन है कई छुपे हुए गहन अपराध, भ्रुणहत्या, दहेज, महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा आदि। आज के वक्त में जब जनता दामिनी, गुड़िया और निर्भया पर हुए अन्याय का बदला लेने के लिये सड़को पर है इस दौर में प्रेमचंद का नारी के प्रति दृष्टिकोण सर्वाधिक प्रासंगिक बन पड़ता है।[20]

संदर्भ

1. रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 17. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
2. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 18. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
3. ↑ रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 15
4. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 19. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
5. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५६.
6. ↑ "Munshi Premchand: गांधी और प्रेमचंद का साथ-साथ चलना हिंदी साहित्य में एक महान उपलब्धि". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-07-31.
7. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.
8. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 20. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

9. ↑ यह उपन्यास उर्दू साप्ताहिक 'आवाजे खल्क' में 8 अक्टूबर 1903 से 1 फ़रवरी 1905 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक का नाम छपा था- मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी। बाद में स्वयं प्रेमचंद ने इसका हिन्दी तर्जुमा 'देवस्थान रहस्य' नाम से किया, जो उनके पुत्र अमृतराय द्वारा उनके आरंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचारण' में संकलित है।
10. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 21. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
11. ↑ NEWS, SA (2022-07-30). "Munshi Premchand Jayanti (मुंशी प्रेमचंद जयंती): 'गोदान' उपन्यास के रचयिता प्रेमचंद के बारे में जाने सम्पूर्ण जानकारी". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2022-07-30.
12. ↑ सिंह, डॉ॰बच्चन (1972). प्रतिनिधि कहानियाँ. वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी, चौक. पृ॰ 9.
13. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 616-17.
14. ↑ वीर भारत, तलवार (2008). किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द:1918-22. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ॰ 19-20.
15. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 618.
16. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 619.
17. ↑ डॉ कमल किशोर गोयनका (संपादक)- "प्रेमचंद कहानी रचनावली", 6 भागों में, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, भूमिका (भाग-१)
18. ↑ प्रेमचंद (१९३८). सप्तसरोज. ज्ञानवापी, काशी: हिन्दी पुस्तक एजेंसी. पृ॰ 1.
19. ↑ हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ॰ रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006, पृष्ठ संख्या- 518
20. ↑ Desk, India com Hindi News. "जब प्रेमचंद ने लिखा पहला नाटक और मामा ने कर दिया गायब, पढ़िए 'कलम का सिपाही' की पहली कहानी". India News, Breaking News, Entertainment News | India.com. अभिगमन तिथि 2020-08-01.

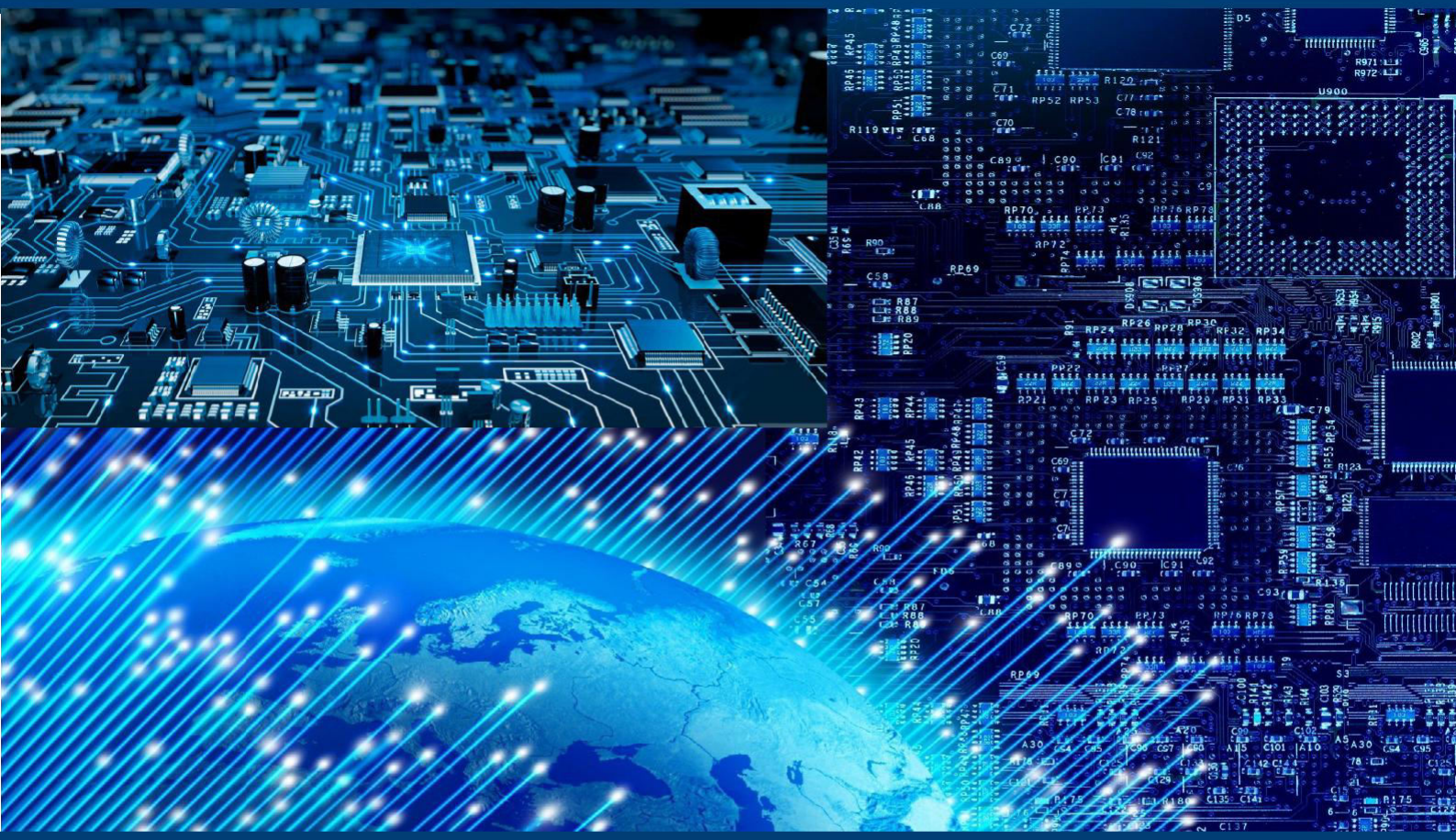

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |